भा.वा.अ.शि.प. में 27 जून 2013 को राजभाषा हिन्दी कार्यशाला तथा हिन्दी साफ्टवेयर "सारांश" पर प्रशिक्षण का आयोजन

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए दिनांक 27 जून 2013 को भा.वा.अ.शि.प. सभागार में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ. एस. पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून थे। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री एस. पी. चौबे, निदेशक (राजभाषा), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय थे। सर्वप्रथम श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ. शि.प., देहरादून ने सभी सहभागियों का स्वागत किया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. एस. पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन), भा.वा.अ.शि.प., द्वारा द्वीप प्रज्जलित कर किया गया। उन्होने अपने सम्बोधन में कहा कि यदि हम सभी को हिन्दी लिखने के लिए प्रयास करे तो हम इसके परांगत हो सकते हैं इसमे किसी प्रकार की हिचकिचाहट की आवश्यकता नहीं है।

श्री एस. पी. चौबे, मुख्य वक्ता ने बतलाया कि हम सभी राजभाषा अधिनियम का अनुपालन करना आवश्यक है। उन्होने अपने व्याख्यान में राजभाषा नियमों पर चर्चा करते हुए राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली के बारे में संक्षेप में बताया।

डॉ. पी. पी. भोजवैद, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने कहा कि कोई भी भाषा किसी भी अन्य भाषा से कमतर नहीं होती प्रत्येक भाषा का अपना महत्व है परन्तु हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो सभी भाषाओं के साथ घुलमिल जाती है इसलिए हिन्दी का अपना महत्व है तथा निरन्तर प्रयोग करना चाहिए।

श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार पर बल देते हुए कहा कि केवल हिन्दी भाषी नहीं अपितु गैर हिन्दी भाषी को भी हिन्दी में कार्य करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि हमारी राजभाषा हिन्दी ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें एक सूत्र में पिरोती है। एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान भी सम्प्रेषण में सहायक सिद्ध होता है। परिषद् में अधिकांश कार्य हिन्दी में किये जा रहे है जो कि हमारे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है।

भा.वा.अ.शि.प. के समस्त सहायक महानिदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान के सभी प्रमुख तथा भा.वा.अ.शि. प./वन अनुसन्धान संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। इस कार्यशाला में लगभग 250 कर्मचारियों ने सहभागिता की। अन्त में श्री विवेक खाण्डेकर, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

इसके साथ ही भा.वा.अ.शि.प. की ओर से वन अनुसन्धान संस्थान की कम्प्यूटर प्रयोगशाला में हिन्दी प्रशिक्षण का आयोजन भी किया गया। इस प्रशिक्षण के लिए श्री गगन शर्मा, अभियंता, आर्यन–ई–साफ्टवेयर, प्रमुख प्रशिक्षक थे। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य भा.वा.अ.शि.प. के कुछ कर्मचारियों को सारांश साफ्टवेयर के मास्टर प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षित करना था ताकि बाद में वे अन्य कर्मचारियों को सारांश साफ्टवेयर पर प्रशिक्षण दे सकें।

श्री गगन शर्मा, अभियंता, आर्यन–ई–सॉफ्टवेयर, नई दिल्ली ने सारांश सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण देते हुए यूनिकोड से सम्बन्धित जानकारी दी तथा उससे जुडी भ्रान्तियों को दूर किया।

A workshop on official language Hindi and training on "Saransh" Software were organized at ICFRE on 27 June 2013

A workshop on official language Hindi was organized on 27 June 2013 to promote Hindi in official work. The Chief Guest of the occasion was Dr. S. P. Singh, DDG (Admin), ICFRE, Dehradun. The main Speaker of the workshop was Shri S. P. Chaubey, Director (Rajbhasha), MoEF. Shri Saibal Dasgupta, DDG (Extension), ICFRE welcomed the participants. The workshop was inaugurated by Dr. S. P. Singh, DDG (Admin), ICFRE, with the lighting of lamp. He said that Hindi can be used easily in our day to day works, however, the will and inclination to do so is required. Shri S.P. Chaubey, Director (OL), MoEF, New Delhi in his address on the Rajbhasha rules discussed the procedural aspect of Parliamentary Committee on Official Language.

Dr. P.P. Bhojvaid, Director, FRI, All ADGs of ICFRE, HoDs from FRI and Scientists, Officers and Officials of ICFRE and FRI were present in the workshop. Around 250 participants participated in the workshop. The inaugural session ended with the vote of thanks by Shri Vivek Khandekar, ADG (Media and Extension).

A training on Hindi Software "Saransh" was also organized at FRI computer lab on behalf of ICFRE in the afternoon of 27th June 2013. Shri Gagan Sharma, Engineer, Aryan-E-Software was the trainer. The aim of the training was to train officials of ICFRE as master trainers for Hindi software "Saransh".